

भगत रविदास – सबद २४

नाथ कछूअ न जानउ ॥

रागु जैतसरी, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ७१०

नाथ कछूअ न जानउ ॥

मनु माइआ कै हाथि बिकानउ ॥१॥ रहाउ ॥

तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी ॥

हम कहीअत कलिजुग के कामी ॥१॥

इन पंचन मेरो मनु जु बिगारिओ ॥

पलु पलु हरि जी ते अंतरु पारिओ ॥२॥

जत देखउ तत दुख की रासी ॥

अजौं न पत्याइ निगम भए साखी ॥३॥

गोतम नारि उमापति स्वामी ॥

सीसु धरनि सहस भग गाँमी ॥४॥

इन दूतन खलु बधु करि मारिओ ॥

बडो निलाजु अजहू नही हारिओ ॥५॥

कहि रविदास कहा कैसे कीजै ॥

बिनु रघुनाथ सरनि का की लीजै ॥६॥१॥

सार: जब आत्म-चिंतन अहंकार को चुनौती देता है तब उसकी पहली प्रवृत्ति बदलाव का विरोध करके, भ्रम से चिपके रहकर और सच्चाई से बचकर स्वयं को बचाने की होती है। हमारी सोच को उन कहानियों और धारणाओं से बांधने के लिए सिर्फ एक लगाव, एक सोच, एक ज़रूरत, एक डर ही काफ़ी है, जिन्हें हम ढोते रहना चाहते हैं और यही बंधन दुःख को जन्म देता है। इनसे मुक्ति उसी पल शुरू होती है जब हम इस बात से वाकिफ़ हो जाते हैं कि हमारे कामों और इरादों को क्या संचालित कर रहा है और जो असली नहीं, उसे छोड़ देते हैं। यह समर्पण कमज़ोरी नहीं है बल्कि भ्रम

का पीछा न करने और दुख को खत्म होने देने का एक साहसी फैसला है ताकि एक शांत, स्थिर शांति मिल सके, यह वास्तविक स्व में लौटने जैसा अनुभव करा सकता है।

नाथ कछूअ न जानउ ॥

हे सर्वव्यापी स्वामी, मुझे किसी चीज़ का ज्ञान नहीं है। यह सर्वव्यापी स्रोत को समझने में, अपनी बौद्धिक सीमाओं की विनम्र स्वीकृति है जो उसकी व्यापकता को खोजने की जिज्ञासा को प्रकट करती है।

मनु माइआ कै हाथि बिकानउ ॥१॥ रहाउ ॥

मन माया के हाथों बिक गया है। यह अपनी चेतना पर नियंत्रण खोने का संकेत देता है। स्वेच्छा से स्वयं को क्षणभंगुर इंद्रिय आकर्षणों के अधीन सौंप, यह उनका गुलाम बनने की बात करता है।
(१)(विराम)

तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी ॥

आपको सार्वभौमिक ज्ञान और सर्वोच्च सत्ता का स्रोत माना जाता है। यह हमारे भीतर स्थित उस चेतना को स्वीकार करता है जो हमारे चित्त और अस्तित्व के अंतिम मार्गदर्शक हैं।

हम कहीअत कलिजुग के कामी ॥१॥

हमें अज्ञान के युग में लिप्त रहने वाला माना जाता है। यह 'हम' को एक द्वंद्वग्रस्त चित्त के रूप में और कलयुग को एक हानिकारक मानसिकता के रूप में पहचानता है, दोनों स्पष्टता के बजाय अज्ञान से आकार लेते हैं। (१)

इन पंचन मेरो मनु जु बिगारिओ ॥

इन पाँच शक्तियों ने मन को भ्रष्ट और विकृत कर दिया है। यहाँ पाँच का मतलब है अनियंत्रित कामना, क्रोध, लालच, मोह और अहंकार, जो मानसिक संतुलन को अस्थिर करते हैं।

पलु पलु हरि जी ते अंतरु पारिओ ॥२॥

पल-पल यह सर्वव्यापी एकत्व से अलग होने की भावना पैदा करते हैं। यह इंगित करता है कि चेतना से प्रत्येक क्षण का विच्छेद, एकत्व के विभाजन को और बढ़ा देता है। (२)

जत देखउ तत दुख की रासी ॥

जहाँ भी देखता हूँ वहाँ दुख के कई कारण दिखाई देते हैं। यह इस अंतर्दृष्टि पर प्रकाश डालता है कि इंद्रिय इच्छाओं पर केंद्रित मानसिकता अनिवार्य रूप से अशांति की दर्दनाक स्थिति की अवस्था में पहुँचाती है।

अजौं न पत्याइ निगम भए साखी ॥३॥

फिर भी मन को विश्वास नहीं होता जबकि आध्यात्मिक ग्रंथ स्वयं इस सत्य के साक्षी हैं। यह अहंकार के उस इनकार को दर्शाता है, जो प्रामाणिक होने पर भी सार्वभौमिक ज्ञान को स्वीकार नहीं करता। (३)

गोतम नारि उमापति स्वामी ॥

ऋषि गौतम की पत्नी और उमा के पति भी। इन पौराणिक पात्रों के उदाहरणों के माध्यम से यह दिखाया गया है कि कोई भी पद या स्थिति प्रकृति के नियमों और मनोवैज्ञानिक दुर्बलताओं से मुक्त नहीं कराती है।

सीसु धरनि सहस भग गाँमी ॥४॥

इंद्र, जो पृथ्वी को धारण करने वाले प्रतीकात्मक सर्वोच्च देवता हैं, उन्होंने बुरे इरादों के कारण हजार निशानों का श्राप सहा। यह पौराणिक कहानी इस बात पर ज़ोर देती है कि अगर हम अपनी सतर्कता खो देते हैं तो अनियंत्रित प्रवृत्तियाँ, सजगता के अभाव में, ज्ञान की उच्चतम अवस्थाओं को भी बाधित कर सकती हैं। (४)

इन दूतन खलु बधु करि मारिओ ॥

इन राक्षसों ने मुझे मूर्ख और सीमित कर दिया है जिससे मेरा विनाश हुआ। यह दर्शाता है कि जब हम द्वैत और बुराइयों को हावी होने देते हैं तब हमारा अस्तित्व एक तरह से, आध्यात्मिक मृत्यु का अनुभव करता है।

बडो निलाजु अजहू नही हारिओ ॥५॥

अहंकार इतना निर्लज्ज है कि अब भी हार स्वीकार नहीं करता। यह व्यवहार एक अज्ञानी मन की ज़िद को उजागर करता है जो अपने द्वारा बनाई गई उथल-पुथल के बाद भी, बार-बार अपने प्रशिक्षित तरीकों पर लौट आता है। (५)

कहि रविदास कहा कैसे कीजै ॥

रविदास कहते हैं, मुझे बताओ कि इस अवस्था को कैसे पार करूँ। यह प्रश्न अहंकार और अज्ञान के चक्र से मुक्त होने की गहरी लालसा को दर्शाता है जो दुख को बनाए रखती है।

बिनु रघुनाथ सरनि का की लीजै ॥६॥ १॥

सर्वव्यापी चेतना की शरण के अलावा, कोई किसकी शरण ले सकता है। यह हमें इस अनुभूति की ओर ले जाता है कि अहंकार की पकड़ से मुक्ति का एकमात्र मार्ग प्रकृति के नियमों के साथ पूर्ण सामंजस्य में है। (६)(१)

तत्त्व: भगत रविदास पाँच उत्तेजनाओं के महत्वपूर्ण प्रभाव पर प्रकाश डालते हैं। वह पौराणिक कथाओं से उदाहरण देते हैं और दिखाते हैं कि कैसे सबसे ज्ञानी पौराणिक पात्र भी इन शक्तियों के आगे झुके हैं। वह अहंकार की मूर्खता पर ज़ोर देते हैं जो दुख झेलने के बावजूद, अपनी इंद्रियों के भ्रम से ज़िद से चिपका रहता है। वह हमें इन इंद्रियों का बहादुरी से सामना करने, उन पर महारत हासिल करने और उन्हें नियंत्रित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, ऐसा करके, हम सार्वभौमिक चेतना के प्रति समर्पण के माध्यम से अहंकार से सच्ची मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com